कहानी

बाथरूम वाली लड़की

बलराज सिंहमार

आज कई वर्षों के बाद मानसी उस रास्ते पर दोबारा जा रही है जिस रास्ते पर वो अपने B.Ed के दौरान जाती थी। बस में बैठ कर वह उन जगहो को देख रही थी जिनको वर्षों पहले वह देखते हुए जाया करती थी, टूटी हुई छोटी सी सड़क, जिसमें जगह-जगह गड्ढे बने हुए हैं। पिछले 6-7 वर्षों में कोई खास बदलाव नहीं आया। आज भी लोग उसी तरह साइकिल, बाइक तो कोई स्कूटी लेकर कहीं से भी होते हुए बीच में घुस कर बस के सामने आ जाता है। अब उसे बचाने की जिम्मेदारी बस के ड्राइवर की होती है।

रास्ते में मानसी ने देखा की छोटी-छोटी लड़कियां दो चोटियां बनाकर, स्कूल बैग उठाकर, बातें करते हुए स्कूल की तरफ जा रही है। उसे अपने कालेज के दिन आँखो के सामने सिनेमा की तरह चलते हुए दिखाई पड़ रहे थे। मानो वो अभी उन्हीं दिनों में जीवन जी रही है। बस में बैठे-बैठे मानसी अपनी पुरानी यादों में खो जाती है जब वो बी.एड कालेज में जाती थी.....

क्लास खत्म होने की घंटी बजी, मानसी ने टाइम देखा और वह बाहर की तरफ भागती है जबकि मैडम अभी भी क्लास रूम में ही हैं। वह भागते हुए जल्दी से वॉशरूम मैं घुस जाती है, पहले अपनी पॉकेट से डब्बे वाला फोन निकाल कर बडे इत्मीनान से बैठती है। फोन का मैसेज बॉक्स खोला जिसमें 3-4 मैसेज आए हुए थे। उसने फटाफट मैसेज भी लिखा सॉरी यार क्लास चल रही थी। फिर उसने सीट पर बैठकर बातें करने लगी।

हेलो! जानू

क्लास चल रही थी !

खत्म होते ही फटाफट भागी हूं।

बताओ खाना खा लिया?

बुलबुल!

नहीं यार अभी पहली ही क्लास हुई है, बाद में देखती हूँ। उधर से आवाज धीरे धीरे आती है; इधर से मानसी भी धीमें धीमें बोल रही है, तभी बाहर से कोई दरवाजा खटखटाता है यार कितना टाइम लगाओगे? हम भी बाहर खड़े हैं जल्दी करो ना? अंदर से मानसी झुँझला कर बोलती है

बलराज सिंहमार दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली में हिन्दी के प्रोफेसर हैं। विभिन्न पत्रिकाओं में लगातार लिखते रहते हैं।

'यार वॉशरूम तो फ्री होकर करने दिया करो। कैसी लड़कियां हैं फ्री होकर न तो बात करने देती और ना ही टॉयलेट ? 'यार दूसरे में चले जाओ मुझे टाइम लगेगा।

फोन पर धीरे-धीरे खुसर-पुसर शुरू हो जाती है दोनों बातों में लगे हुए है तभी कोई और दरवाजा खटखटाता है ...
यार खोलो ना?

बड़ी तेज लगी है

अंदर से मानसी बोलती है यार टॉयलेट आया है टाइम लगेगा फिर वह प्रेम भरी खुसर-पुसर के लग जाती है । मानसी बुदबुदाती है-

'यार ये लोग चैन से बात भी नहीं करने देगें'

फोन को कंधे और कान के बीच लगाकर, वह बाहर आती है और हाथों को साबुन से धोती है लेकिन ध्यान पूरा बातों और फोन पर लगा हुआ है। बात चल रही है,

तभी पीछे से किसी की आवाज आती है-

यार बाथरूम में भी लगी हुई है, लगी रह-लगी रह...

मानसी ने कहा- यार जरूरी फोन था।

तब तक बाथरूम में ओर भी कई लड़कियां आई और चली गई लेकिन वह फोन पर लगी हुई थी। तभी खुशी ने आकर कहा - मैडम आ गई है जल्दी जाओ।

वह भागते हुए- ये मैडम ! भी इतनी जल्दी आ जाती हैं ना? क्लास में घुस जाती है और अपनी सीट पर जाकर रीता के बगल में बैठ गई।

रीता धीमें से- इतनी देर तक कहां थीं?

मानसी- यार वॉशरूम गई थी।

इतना टाइम लगा दिया??

वह मुँह पर ऊँगली लगाकर धीरे से - चुप रहो सीईईईई

सामने मैडम अपनी क्लास शुरू कर चुकी थी वह मनोविज्ञान के बारे में बता रही थी 50 मिनट के बाद क्लास खत्म हो जाती है।

मानसी फिर क्लास से बाहर जाती है लेकिन क्लास से बाहर जगह कम थी इसलिए वह एक कोने में खड़े होकर फोन पर बात करने लगी।

उसकी फ्रेंड बिंदु कहती है - अरे कहां फोन पर लगी हैं?

वह उसकी बात को अनसुना करते हुए, बाथरूम की तरफ जाती है अंदर जाकर बात करती है। तभी एक लड़की कहती है मैडम आ गई है क्लास में। वह भाग कर क्लास में घुस जाती है। मैडम क्लास शुरू कर चुकी है टाइम धीरे-धीरे आगे खिसकता है मानसी बड़े ध्यान से, तन्यमयता से लेक्चर सुनती है । टाइम का पता ही नहीं चला। टरन-टरन-टरन की घंटी बजी तो क्लास खत्म होने का पता चला...

रीता ने कहा-लंच टाइम हो गया है सब खाना खाते हैं, बडी तेज भूख लग गई यार।

बिंदु- यार तू बाहर कहां जाती रहती है बार बार है?

मानसी- यार वॉशरूम गई थी

तू बार- बार वॉशरूम जाती है?

मानसी- नहीं जाना चाहिए?

रीता- मैने मना कहां किया जाने से।

मानसी थोडा खीझकर – 'यार वॉशरूम मुझे आता है तो ये मुझे तय करना है कब जाना है या नहीं जाना ??'

अब जल्दी से खाना खाओ फिर क्लास शुरू होने वाली है। एक तो लंच टाईम कम मिलता है और ऊपर से दोस्तों के फालतू सवाल....

बिन्दु- 'ठीक है ठीक है खाते हैं'

सभी फटाफट खाना खाते हैं और क्लास की तरफ भागते हैं। क्लास के बाद लगातार अगली क्लास चलती है रोज शाम का पता ही नहीं चलता, कब शाम हो जाती है। 4.30 क्लास खत्म। रोज की तरह बस का इंतजार। बस आती है ज्यादा भीड़ तो नहीं है। चारों फ्रेंड्स बस में चढ़ जाती हैं सीट भी अक्सर मिल ही जाती है। मानसी खिड़की की तरह बैठती है खिड़की के बाहर चलते पेड़ों को चलते हुए देखती है, मोटरसाइकिल पर लड़का-लड़की कितने सटकर बैठे हैं। लड़की कैसे बाइक को जिकजैक करके चला रहा है, वह लोगों को देखती चली जा रही है। वह देख सबको रही है पर उसके मन में कुछ और चल रहा है, इधर बस चल रही है सवारी बस में उतर रही है और चढ़ भी रही है। 15-20 मिनट के बाद स्टैंड आता है सारी सवारी उतरती जाती है। मानसी और उसकी फ्रैंड भी उतरते हैं और सब अपने अपने घर की तरफ जाने रास्ता पकड़ लेती हैं ....

अगले दिन सुबह मानसी शेयरिंग वाली टैक्सी से कॉलेज पहुंचती है सुबह फिर वही क्लास शुरू। जैसे ही 9:30 होते हैं वह फिर भागती है वॉशरूम की तरफ और वॉशरूम में जाकर वही फोन पर खुसर-फुसर शुरू हो जाती है। वह 15-20 मिनट बात करती है। इसी बीच कोई न कोई आकर उसे वाशरूम से बाहर आने के लिए कहता। वह अपनी बातों में मशगूल रहती है।

जब वापस क्लास में आती है तो रीता हमेशा की तरह कहती है- यार तू सुबह आते ही चली जाती है ? ऐसा क्या रखा है वहां पर? जो तू बार-बार वहां जाती हैं?

वह झुँझलाहट में भरकर धीरे से 'वॉशरूम से तुम्हें क्या प्रॉब्लम है ?'

नहीं तो।

फिर ??

इस तरह रोज यह चलता। मानसी रोज 9.30 पर वाशरूम जाती। उसकी सारी फ्रेंड यह सोचने लगी कोई न कोई तो चक्कर चल रहा है इसका ??

वह कौन है ??

उनको हमेशा ये लगता कि ये हमारे साथ होकर भी हमारे साथ नहीं होती ?? कहां बिजी रहती है ?? रोज सुबह 9:30 बजे बाथरूम जाती है। ऐसा वहां क्या है ?? अब उसकी फ्रेंड भी उसके पीछे पीछे जाने लगी वे जानना चाहती थी कि माजरा कया है ?? वे जानना चाहती थी कि आखिर वह बाथरूम में क्या करती है? लेकिन मानसी बाथरूम में जाकर दरवाजा अन्दर से बंद कर देती थी तो उनको यकीन हो गया की उसका कोई न कोई चक्कर चल रहा है लेकिन वो हमें नहीं बताती। आखिर क्यों ??

अब क्लास के सभी फ्रैंड उसे "बाथरूम वाली लड़की" के नाम से जानने लगे। इस तरह 8-9 महीने तक इसी तरह चलता रहा वह 9:30 बजे बाथरूम जरूर जाती। 9:30 बजे ही क्यों जाती ?? उसकी फ्रेंड ये जानने में लगी रहती कि किसी तरह उसके चक्कर का पता चले और हम उसके साथ मजे लें। लेकिन मानसी कभी इस बारे में बात ही नहीं करती ? उसकी फ्रेंड उससे पूछती - यार कोई चक्कर है तो बता दे? कौन है वह? क्या करता है?

वह हमेशा कहती- यार कोई भी नहीं है, तुम लोग मेरी बात पर भरोसा क्यों नहीं करते ?

अब मैं कैसे तुम्हें भरोसा दिलाऊँ ? वॉशरूम आता है वाशरूम जाती हूं इसमें अजीब क्या है ?

अब सारे फ्रेंड्स उसे "बाथरूम वाली लड़की" के नाम से पुकारने लगे। उसे कभी बुरा भी नहीं लगा इस बात को लेकर। वह इस बात को बड़ी सहजता से लेती।

समय बड़ी तेजी से पंख लगाकर उड रहा था 9-10 महीने बाथरूम में आते-जाते कब बीते पता ही नहीं चला। इसी टूटी सडक से गुजरते हुए कब B.Ed. पूरी हो गई समय के गुजरने का आभास ही नहीं हुआ। देखते ही देखते B.Ed. पूरी हो गई। सभी फ्रेंड्स अपने रास्ते चल पडे। अब उन दोस्तों से मुलाकात भी नहीं होती बात भी कभी कभी होती है वो भी जब किसी को कोई काम होता है तब ही। कोई कहीं चला गया कोई कहीं चला गया। किसी की शादी हो गई , कुछ के तो बच्चे भी हो गये। सभी अपनी अपनी दुनिया में व्यस्त हो गये... मानसी अपनी पढाई लिखाई में लग गई, उसने काफी अच्छे अंकों से एम.ए कर लिया, फिर एम.फिल भी प्रथम श्रेणी से गोल्ड मैडल के साथ किया। अब वह पी-एच.डी. की रिसर्च स्कालर है। पी-एच.डी. में वह व्यस्त रहती है। रीता ने शादी कर ली उसकी जॉब दिल्ली से बाहर लग गई। बिन्दू भी स्कूल में जॉब करने लगी....

समय अपनी गति से पंख लगाकर उडे जा रहा है आज 6 साल के बाद मानसी उसी रोड पर बस में बैठकर जा रही है अकेले-अकेले। सीट पर बैठे बैठे पुराने दिनों को याद कर रही है कि किस तरह सुबह-सुबह बस में या कभी कभी शेयरिंग वाली टैक्सी में बैठ कर वह जाती थी अपने बी.एड कॉलेज इसी रास्ते से। पुरानी यादों में खोई हुई ममू किसी गहन चिंतन में डूबी हुई है। बस स्टैंड आता है वह कंडक्टर से पूछती है ये कौन सा स्टैंड है?

'कोनापुर' – कंडक्टर धीरे से बोला।

वह बस से नीचे उतरकर अपने गतंव्य तक पैदल जाने लगती है। पहुँचने के बाद देखती है कि गेट बंद है। उसे देखकर सिक्योरिटी ने गेट खोला- जी मैडम किनसे मिलना है?

धीरे से कुछ कहा और फिर वह अन्दर चली गई। वह सीधे ऑफिस में जाती है। उसने ऑफिस में बताया कि वह यहां स्कूल में पी.जी.टी. ज्वाइन करने आई है।

एक महिलाकर्मी ने कहा- मैडम बैठिए

जी धन्यवाद !

मैडम आपने पहले भी कहीं पढाया है ??

नपा-तुला जबाब- नहीं

अभी आप क्या कर रहे हैं मैडम ?

पी-एच.डी.

ओह !!

पी-एच.डी. बहुत खूब मैडम, हमें तो किसी ने बताया नहीं और न ही सलाह दी।

तो मैडम ! आप तो कभी भी प्रोफेसर लग जाओगे ?

वह धीरे से बोली- देखते हैं।

अरे- शालू मैडम; देखिए हमारे यहां नई पी.जी.टी. आई हैं।

शालू मैडम पीछे से आकर बोलती हैं- बहुत-बहुत शुभकामनाएं मैडम !! आपका स्वागत है।

मानसी ने खडे होकर धीरे से बोली - धन्यवाद

शालू मैडम तब तक मेरे सामने आ गई और एकदम उछलकर चिल्ला उठी- अरे !!

बाथरूम वाली लड़की !!

सब शालू मैडम के चेहरे के भावों और कभी उनकी भंगिमाओं को आश्चर्य से देख रहे हैं??

शालू मैडम की खुशी देखते ही बन रही है।

तुम आई हो पीजीटी बनकर ?

मैंने उसे गौर से देखा वह चेहरा जाना-पहचाना सा लगा

उसने कहा- मुझे नहीं पहचाना ?

मानसी ने कहा- चेहरा तो पहचाना सा लग रहा है लेकिन नाम याद नहीं आ रहा?

उसने कहा- "बाथरूम वाली लड़की"

हमने साथ-साथ B.Ed की है आई.पी. कालेज से है।

तू भूल सकती है हमें, हम थोडी भूल सकते है उस "बाथरूम वाली लडकी" को...

शालू के मन में बडे सवाल उमड़ रहे थे वह उससे काफी बात करना चाह रही थी

जॉइन करने की सारी औपचारिकताएँ पूरी होती हैं फिर प्रिसिंपल से मिलकर बातचीत होती है। प्रिसिंपल ने बोला 'आपको कल से टाइम-टेबल मिल जाएगा' तभी शालू आती है।

प्रिसिंपल मैडम ! हमने साथ साथ बी.एड. किया है, हम अच्छे दोस्त रहे हैं।

मैडम हम बाहर बात कर लें।

हाँ ! हाँ !

शालू और मानसी बाहर मैदान की तरफ आ जाते हैं।

शालू - बताओ, क्या चल रहा है?

मानसी ने धीरे से कहा – 'पी-एच.डी.'

शालू- सच में !!

मै तो, पहले की तरह ही तू तू करके बोल रही हूं खराब तो नहीं लग रहा?

नहीं तो

अब तो तू पी-एच.डी. कर लेगी, प्रोफेसर बन जाएगी।

यार सच में यकीन ही नहीं हो रहा ??

हमें तो ये लगता था कि पता नहीं तेरी बी.एड. भी पूरी हो पाएगी??

लेकिन तू तो ...

सचमुच हम सब तेरे बारे में क्या-क्या सोचते थे?? तूने सबको गलत साबित कर दिया यार !

एक बात तो बताओ, नहीं तो मन में ये हमेशा रहस्य बना रहेगा।

बोलो !

यार तुम बार बार बाथरूम में क्या करने जाती थी ??

मानसी ने कहा 'देखो उस समय भी तुम लोग मेरी बात पर यकीन नहीं करते थे और शायद आज भी नहीं करोगे'

चलो एक बात बताओ अगर मेरा किसी से कोई चक्कर भी होता तो क्या हो गया??

मै फोन पर अपने ब्वायफ्रेंड से बात करती थी तो उससे किसी का क्या जाता था?

देखो शालू !

आप लोगों की बात मान लेती हूँ कि मेरा चक्कर था किसी से। लेकिन देखो यार मैने फिर भी आगे पढाई लिखाई की ना । किसी चक्कर में पड़कर मैने पढाई लिखाई बंद की ?? बी.एड. भी प्रथम श्रेणी से अधिक अंको से उतीर्ण की, एम.ए. में भी प्रथम श्रेणी से अधिक अंक हैं, एम.फिल में गोल्ड मेंडल मिला और पी-एच.डी. भी कर रही हूँ अगले वर्ष थीसिस जमा करा दूँगी और हाँ नेट भी 3-4 बार निकाल चुकी हूं। अगर मै किसी चक्कर में लगी होती तो ये सब होता ??

बताओ तो???

पता नहीं हमारी सारी फ्रैंड के मन में यही रहा है कि लडकी किसी चक्कर में पड़कर पढेगी नहीं? यार

एक बात कहूँ किसी के चक्कर में पड़कर भी पढा जा सकता है और अच्छे से पढ़ा जा सकता है। अगर सामने वाला ही आपको आगे पढने के लिए प्रोत्साहित करे तो ? प्यार किसी को बंधन में नहीं बाँधता बल्कि मुक्त रखता है । प्यार रास्ते की रूकावट नहीं बनता अगर रूकावट बने तो वह प्यार नहीं होता।

शालू गंभीर हो गयी उसक चेहरे पर तनाव और पाश्चाताप साफ साफ झलक रहा था। उसने धीरे से कहा- 'मानसी यार मुझे तो कम से कम माफ कर दे' हम तेरे को हमेंशा गलत समझते थे लेकिन तू तो आज हम सबसे ज्यादा पढ़ी लिखी है। हम सब तेरा मजाक बनाते थे लेकिन आज तूने साबित कर दिया कि मानसी मानसी है। उसकी आँखें भर आई ...

मुझे खराब लगा मैने बोझिल माहौल को थोड़ा खुशनुमा बनाने के लिए उसके कंधे पर हाथ रखा और कहा- 'यार कुछ भी कहो मुझे न तो कभी पहले बुरा लगा और न मैने बुरा महसूस किया जब तुम सब मुझे- "'बाथरूम वाली लडकी" "बाथरूम वाली लडकी" कहकर छेड़ते थे। बहुत अच्छा लगता था मैं तो तब भी उसे एन्जॉय करती थी और आज भी उसे याद करके एन्जॉय करती हूँ। आज हम सब अलग अलग रहते हैं देखो एक दूसरे को संभवतः याद भी नहीं करते होगें ??

ये वही समय है जो हमें आज भी साथ ले आता है यार जिन्दगी बार-बार नहीं मिलती है खूब पढ़ो और आगे बढ़ो। बाकी बताओ.....

शालू भी मुस्कुरा उठी और दोनों साथ-साथ आफिस की तरफ चल दी ....